आओ धरती माँ को जाने

सागर के जीव जन्तु

●अरविन्द

आचार्य भू देव ने उत्सुक बच्चों के कौतुहल भाव को महसूस किया तो वे मुस्करा पड़े। बोले– ''हाँ–हाँ बच्चो ! हमें अपना वायदा याद है। आज हम तुम्हें समुद्री जीव जन्तुओं का परिचय देते हैं। देखो जीव–जन्तु एक व्यापक शब्द है , अति सुक्ष्म 'अमीबा' से लेकर 'हाथी' जैसे वृहद्काय, सभी इस जीव शब्द में आएंगें। पर बच्चो! याद रहे जितने आँखो से दीखते हैं, असल में अनदेखे (सूक्ष्म) जीव उससे ज्यादा ही होते हैं। उनके बारे में तो यहाँ कुछ कहना व्यर्थ ही है, क्योंकि जो सामान्य ज्ञान और जानकारी हम तुम्हें देना चाहते हैं उसके ये अंग नहीं हैं अत: जीव से तुम वनस्पति ही मानो। आखिर तो पौधों में भी जीवन होता है न।''

बच्चों ने सिर हिला दिया। तो बच्चो!, आज हम तुम्हे सागर में पाई जाने वाली वनस्पति और जीवों का मोटा–मोटा परिचय कराते हैं।

''अच्छी तरह क्यों नहीं?'' – प्रशांत ने उठकर पूछा।

''भैया, ऐसा है। किसी विषय के बारे में अच्छी तरह तो विशेषज्ञ ही पढ़ा सकता है। जब तुम बड़ी कक्षाओं में जाओगे तब तुम्हें योग्य गुरु मिलेंगे, तब समुद्री जीवन के हर पहलू को भली भाँति परखना उत्तम ज्ञान प्राप्त करने के लिए पहले मस्तिष्क की क्षमता भी तो बढ़नी चाहिए न। देखो भगवान'शिव' को भी पतित पावनी 'गंगा' का वेग सम्हालने के लिए जटाएं खोलनी पड़ी थीं, कमर कस खड़े होना पड़ा।'' आचार्य भू देव हँसे। बच्चे मुदित हुए। कुछ ठहर कर उन्होंने कहना शुरू किया–

''बच्चो। वैज्ञानिकों के अनुसार तो इस पृथ्वी का पहला जीव समुद्र में पैदा हुआ था। आदिकाल की प्रलंयकारी वर्षा थमी, बह–बहकर आया पानी अपने साथ ढेर सारे दृश्य–अदृश्य तत्व खींच लाया था। धीरे–धीरे एकत्रित तत्व संयुक्त हुए उनके मिलन से वायरस उत्पन्न हुआ। वैज्ञानिक इसी वायरस को सृष्टि की आधार शिला बताते हैं।

वायरस के अतिरिक्त कुछ और नन्ही–नन्ही चीजों ने भी बाद में जन्म लिया। नंगी आँखों से इन्हें देखना कठिन था। ये कीड़े भी थे और पौधे भी। इन्हें उक्त वायरस का विकसित रूप माना जाता है। ये पौधे और जानवर दोनो से ही समानता रखते थे। धीरे–धीरे इन तत्वों का विकास हुआ। शाखा उपशाखाओं में ये विभक्त और परिपक्व हुए। पहले एक प्रकार के जानवर और पौधे बने फिर शनै:–शनै: उनका रूप आकार परिवर्तन पाने लगा। होते होते जीव धारियों की एक पूरी श्रंखला बन गई। मनुष्य इसी की अंतिम विकसित कड़ी माना जाता है।

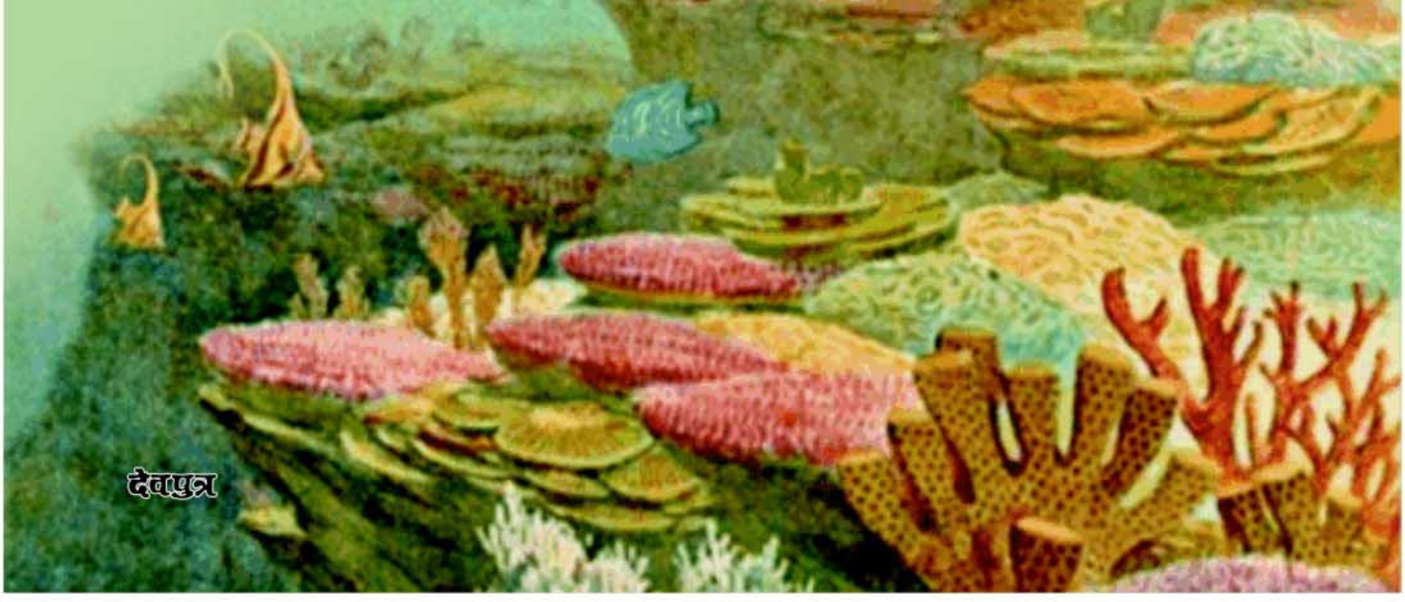

3, 71, 438
प्रसारण संख्या का विश्व कीर्तिमान रचने वाली भारत की एकमात्र बाल पत्रिका
सर्वाधिक प्रसारित हिन्दी बाल मासिक
देवपुत्र

करोड़ों वर्ष तक ये जीवधारी समुद्र की सतह पर या उथले समुद्र में तल पर रेंगते रहे। अन्वेषण में लगभग पांच खरब वर्ष पुरानी चट्टानों पर उनके अवशेष पाए गए हैं। इस समय तक इन जीवों का भूमि पर प्रवेश नहीं हुआ था। अनुमान ये है कि दस खरब वर्ष पूर्व समुद्र के भीतर जीवन आ चुका था।

वर्तमान विज्ञान के अनुमान से समुद्र ही जीव धारियों की वास्तविक जन्म स्थली है, और आज भी वह पृथ्वी को लगातार जीवन दे रहा है। समुद्र के पानी से ही बादल बनकर सूखी जमीन और स्थानीय वनस्पति को वर्षा द्वारा नव– जीवन मिलता है।

भूमि तल पर हम जिस प्रकार वन,पेड़– पौधे देखते हैं वैसा ही समुद्र के अंदर भी पाया जाता है। फर्क बस यह है कि समुद्र के भीतर पनपने वाले मात्र पौधे होते हैं। समुद्री वनस्पति प्राय: छोटे–छोटे पौधों और बेलों की शक्ल में पाई जाती हैं, इनकी सुंदरता किन्ही अर्थों में पृथ्वी के पौधों से कम नहीं होती है।''

बच्चो! समुद्री वनस्पति में 'डायटॉम' सबसे छोटा और उपयोगी होता है ये कई रूपों में पाये जाते हैं। ध्रुव समुद्र तो इनकी अधिकता के कारण ही चमकीले– हरे दिखने लगते हैं। समुद्री मछलियों तथा अन्य छोटे जीवों का यह मन भाया आहार है।

''रेडियो लारियन'' नामक एक अन्य पौधा भी 'डायटॉम' की तरह देखने योग्य होता है। ये कँटीले होते हैं लेकिन हीरे की तरह चमकते हैं। वसंत में विकसित होकर ग्रीष्म काल में सूख जाते हैं। मक्खी–मच्छर जैसे सूक्ष्म समुद्री जीव इन पौधों के बागों में मानो घूमते रहते हैं। 'रेडियो लारियन ' गेरूए रंग का होता है जब इनकी अधिकता होती है तब वह समुद्री स्थल ही गेरुआ दीखने लगता है। मछलियाँ इसे भी बड़े चाव से खाती हैं।

बच्चे बड़े मनोयोग से सुन रहे थे। देखकर आचार्य भू देव संतुष्ट हुए। योग्य शिष्य और ज्ञान की पिपासा देखकर भला कौन 'गुरू' संतुष्ट नहीं होता। 'इच्छा से भीगी हुई उस जमीन पर वे पुन: ज्ञान के बीज छितरने लगे।

(आगे की चर्चा आप पढ़ सकेंगे अगले अंक में – सम्पादक)